सत्र 2022–23

स्वाध्यायी छात्र–छात्राओं हेतु दो वर्षीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

विषय– तबला

एम. ए. प्रथम वर्ष

प्रथम प्रश्नपत्र

संगीत का इतिहास

समयः 3 घण्टे

पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक
100	36

इकाई 1

1. नाट्य शास्त्र के तालाध्याय के आधार पर मार्ग ताल पद्धति का विस्तृत विवेचन।
2. वर्तमान उत्तर भारतीय ताल पद्धति का विस्तृत विवेचन।

इकाई 2

1. अवनद्ध एवं घन वाद्यों की परिभाषा एवं इनका संगीत में उपयोग पर विचार।
2. नाट्यशास्त्र तथा संगीत रत्नाकर में वर्णित निम्नांकित अवनद्ध वाद्यों एव घन वाद्यों का सचित्र वर्णनः–

मृदंग, पणव, दर्दुर, पटह, डमरू, दुन्दुभि, भेरी, झल्लरी, मर्दल निःसाण, करटा, त्रिवली, करताल, कांस्यताल घंटा, जय घंटा, कम्रा, क्षुद्रघंटा।

इकाई 3

1. प्राचीन एवं मध्ययुगीन ग्रन्थों में वर्णित अवनद्ध वाद्यों के पाटाक्षर तथा उनकी रचनाओं का अध्ययन।
2. नाटयशास्त्र में वर्णित अवनद्ध वाद्यों के वादन विधि से संबधित पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या तथा वर्तमान वादन विधि में उनकी उपयोगिता/प्रासंगिकता।

इकाई 4

1. तबला वाद्य की उत्पत्ति एवं विकास का ऐतिहासिक अध्ययन।
2. पखावज (मृदंग) की उत्पत्ति एवं विकास का ऐतिहासिक अध्ययन। बनावट, आकार, वादन शैली तथा नादात्मकता के आधार पर इन पखावज एवं तबला वाद्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

इकाई 5

1. बंदिश की परिभाषा। विस्तारशील– अविस्तारशील बंदिशें, तबले की बंदिशों के विकास का ऐतिहासिक अध्ययन।
2. पेशकार, कायदा, रेला एवं रौ के रचना सिद्धांतों का विस्तृत विवेचन।

सत्र 2022–23
एम. ए. प्रथम वर्ष
द्वितीय प्रश्नपत्र
संगीत के क्रियात्मक सिद्धांत

समयः 3 घण्टे

पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक
100	36

इकाई 1

1. पं. भातखण्डे तथा पं. पलुस्कर तालांकन पद्धतियों का विस्तृत अध्ययन।
2. कर्नाटक ताल पद्धति की जानकारी व पं भातखण्डे एवं पं. पलुस्कर पद्धति का तुलनात्मक विवेचन।

इकाई 2

1. एकल तबला वादन के विकास का ऐतिहासिक परिचय तथा विभिन्न घरानों में एकल तबला वादन के क्रम एवं स्वरूप का अध्ययन।
2. प्राचीन शास्त्र ग्रंथों में वार्णित अवनद्ध वाद्य वादकों के गुण दोष एवं वर्तमान काल में उनकी प्रासंगिकता।

इकाई 3

1. किसी ताल के ठेके को किसी अन्य ताल में सम से सम तक में समायोजित कर ताललिपि में लिखने का ज्ञान।
2. पाठयक्रम के तालों को विभिन्न लयकारियों में लिखना।

इकाई 4

1. मुखडा, टुकडा, परन के रचना सिद्धांतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन। गतों के विभिन्न प्रकारों का विवेचनात्मक सोदाहरण अध्ययन।
2. तिहाई और चकदार का अंतर्निहित सम्बन्ध, तुलनात्मक ज्ञान तथा गणितीय सिद्धांतों का विवेचन।

इकाई 5

1. निम्नलिखित शास्त्रकारों तथा उनके ग्रंथों का सामान्य परिचयः–
   स्वाति मुनि, भरत, मतंग, शारंग देव, व्यंकटमखी, महाराणाकुम्भा, सवाई प्रताप सिंह, पं. विष्णु नारायण भातखण्डे, पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर।
2. निम्नलिखित अप्रचलित तालों को ठाह, दुगुन एवं चौगुन में ताल वर्णन सहित लिपिबद्ध करने का अभ्यास।
   कुम्भ (11 मात्रा), जयमंगल (13 मात्रा), अणिमा (13 मात्रा), फरोदस्त (14 मात्रा), विष्णु (17 मात्रा), शिखर (17 मात्रा) एवं लक्ष्मी (18 मात्रा), गणेश (18 मात्रा)

सत्र 2022—23

एम. ए. प्रथम वर्ष
प्रायोगिक : मौखिक एवं प्रदर्शन

पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक
100	36

पिछले पाठयक्रमों की पुनरावृत्ति।

1. निम्नलिखित मात्रा की तालों में लहरें के साथ सम्पूर्ण एकल वादन करने की योग्यता— 11 मात्रा, 14 मात्रा, 15 मात्रा।
2. त्रिताल के एक आवर्तन मे निम्न तालों के ठेकों के एक आवर्तन को बजाने का अभ्यास— धमार, एकताल, झपताल, रूपक।
3. त्रिताल में विभिन्न जातियों तथा विभिन्न घरानों के पेशकार, कायदे, रेले, सहित सम्पूर्ण एकल वादन की क्षमता।
4. झपताल तथा रूपक में पेशकार, कायदे, रेले, टुकडे, चकदार सहित संपूर्ण एकल—वादन।
5. शास्त्रीय गायन तथा वादन के साथ तबला— संगति में प्रयुक्त ठेकों को अपेक्षित लय में बजाने का अभ्यास।
6. लोक संगीत तथा सुगम संगीत के साथ संगति करने की क्षमता।
7. निम्नलिखित अप्रचलित तालों में से किन्हीं चार तालों की ठाह, दुगुन एवं चौगुन में पढन्त का अभ्यास।
   कुम्भ (11 मात्रा), जयमंगल (13 मात्रा), अणिमा (13 मात्रा), फरोदस्त (14 मात्रा),
   विष्णु (17 मात्रा), शिखर (17 मात्रा) एवं लक्ष्मी (18 मात्रा), गणेश (18 मात्रा)

एम. ए. प्रथम वर्ष
क्रियात्मक : मंच प्रदर्शन

पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक
100	36

1. आमंत्रित श्रोताओं के सम्मुख एकल वादन :
   अ— लहरे के साथ त्रिताल में सम्पूर्ण एकल वादन (न्यूनतम 20 मिनिट)

   ब— किसी अन्य ताल में परीक्षक के निर्देशानुसार एकल वादन (15 मिनिट)
2. गायन तथा वादन की संगति।
3. कुशलतापूर्वक तबला मिलाने की योग्यता।

:संदर्भ सूचीः

1. ताल परिचय भाग 3 – पं. गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव
2. पखावज एवं तबला के घराने एवं परम्पराएँ – डॉ. अबान मिस्त्री
3. ताल वाद्य शास्त्र – डॉ. एम. बी. मराठे
4. भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन – डॉ. अरूण कुमार सेन
5. ताल वाद्य परिचय – डॉ. जमुना प्रसाद पटेल
6. ताल वाद्यों की आवश्यकता एवं उपायेगिता – डॉ. चित्रा गुप्ता
7. तबले का उद्‌गम विकास एवं वादन शैलियॉं – डॉ. योगमाया शुक्ला
8. ताल कोष – पं. गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव